आज का पुरुषार्थ 4 Nov 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *"हमारा लक्ष्य हो विजय माला के श्रेष्ठ रतन बनने का "*

हमारी इस ईश्वरीय **पढ़ाई** का महान **लक्ष्य** है विजयी रतन बनना। हमारी इस स्टूडेंट लाइफ में यह बहुत ही सुन्दर लक्ष्य हमें मिल गया है .. हमारी सम्पूर्ण एजुकेशन में जब रिजल्ट आउट होगी तो **अष्टरतन** होंगे टाप मोस्ट स्टूडेंट, gold medalist फिर सौ होंगे first class student बाकी फिर सेकेन्ड क्लास, थर्ड क्लास।

हमारा लक्ष्य होना चाहिए हम **विजय माला** में आये। यह एक सौ आठ रत्नों की माला विजय माला है। इसमें पहले आठ आत्मायें तो सम्पूर्ण रूप से बाप समान है। और जब प्रत्यक्षता होगी यह अष्टरतन मानो **आठ साकार भगवान** के रूप में इस संसार में प्रख्यात होंगे।

यही आत्मायें एक बिल्कुल बच्चे की तरह **सम्पूर्ण पवित्र** बन जायेंगी। जिन्हें वासनाओं का **ज्ञान** नहीं। जिनके अंदर कोई ईर्ष्या द्वेष नहीं, कोई **व्यर्थ संकल्प भी नहीं।** जो सम्पूर्ण रूप से **आत्म-अभिमानी** बन जायेंगे। एक

सेकेण्ड में देह से न्यारे होने का प्रत्यक्ष **अनुभव** होगा। और जिनके समक्ष आते ही दूसरी आत्मायें भी डीप साइलेन्स में चली जायेंगी। अशरीरी बन जायेंगी।

इसके बाद **विजयी रतन** में सौ है, लेकिन उनमें पहली 25 आत्मायें बहुत ही महान है। तो अष्टरतन भी सर्वश्रेष्ठ, सर्व महान। और यह पच्चीस आत्मायें भी बहुत बहुत महान है। जिनके द्वारा इस **सृष्टि पर स्थापना के कार्य** में मुख्य पार्ट भी बजाया जाता है। विजयी रतन अर्थात सम्पूर्ण पवित्र। विजयी रतन अर्थात जिनका चित सबके लिए शुभ भावनाओं से भरा हुआ हो।

जो **निर्मल** हो गये हो। जिन्होंने अपनी **दृष्टि** को **आत्मिक** बना लिया हो। जो श्रेष्ठ योगी बन गये हो। जो मैं और मेरे पन से मुक्त हो गये हो। जो सम्पूर्ण रूप से **विश्वकल्याणकारी** की स्थिति में स्थित हो गये हो। इसमें वाह्य पद-पोजीशन की कोई बात नहीं। एक गरीब व्यक्ति, घर में रहने वाली माता, एक विना पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी विजयी रतन बन सकता है।

और यह विजयी रतन इस संसार की व्युटी है। यह शोभा है संसार की, यह **सृष्टि चक्र** के श्रृंगार है। चारों युगों में इन महान आत्माओं के स्थिति पर ही संसार की स्थिति निर्भर करेगी। और यह महान बनकर पूरे **कल्प में हीरों**

पार्ट बजायेंगे। जब-जब हमारे देश में आपदायें आयेंगी तो यही आगे बढ़कर हमारे देश की सुरक्षा करेंगे।

तो हम बाबा की इस महान पढ़ाई से स्वयं को तिलक लगाये .. विजयी भव का। माया के हर स्थूल और सूक्ष्म अंश पर हमारी विजय होती चले। हमारे स्वप्न भी सम्पूर्ण पवित्र होते चले। हमारे बोल भी बहुत रॉयल और पवित्र होते चले। **चित निर्मल, कर्मेन्द्रियाँ शीतल होती चले।** तो हम स्वयं ही मेहसूस करेंगे दिनों दिन हमारी विजय हो रही है।

अष्टरतन तो वह होंगे जिनके युद्ध समाप्त हो गया होगा। जिन्हें किसी व्यर्थ को हटाने के लिए मेहनत नहीं करनी है, व्यर्थ होगा ही नहीं। और विजयी रतन एक सेकेण्ड में, दो सेकंड में, दस-बीस सेकंड में, आधे मिनट में, एक मिनट में विजयी बन जायेंगे। इसी के अनुसार वह नम्बरवार कहलायेंगे। नम्बरवार वह विजय माला में पिरोये जायेंगे।

तो आज के दिन स्वयं को इस नशें में स्थित रखेंगे →

" मैं तो विजय माला का ऐसा मणका हूँ, जिसे स्मरण करके भक्त भी समस्याओं से मुक्त हो जाते है, तो भला मेरे पास समस्यायें कैसे ठहर सकती है "

स्वयं को श्रेष्ठ स्वमान में, श्रेष्ठ स्मृति में स्थित रखेंगे।

और ..

" बाबा मेरे साथ है, वह मेरे सिर के ऊपर छत्रछाया है "

...यह नशा भी और यह विज़न बनाकर योग का अद्भुत आनन्द लेंगे।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org